

डिजिटल युग में शांति शिक्षा

*डॉ. अश्वनी कुमार मिश्र

*सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, नागरिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंघई, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

ई-मेल: ashwanikumar12120@gmail.com

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.17314101>

Accepted on: 28/09/2025

Published on: 10/10/2025

सारांश:

डिजिटल युग में शांति शिक्षा, आलोचनात्मक सोच, सहानुभूति और संघर्ष समाधान कौशल विकसित करने के लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, डिजिटल उपकरणों और सोशल मीडिया साक्षरता का उपयोग करती है, साथ ही भ्रामक सूचना और अभद्र भाषा जैसी चुनौतियों का भी समाधान करती है। प्रमुख पहलुओं में डिजिटल नागरिकता विकसित करना, सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा (कार्यक्रमों को लागू करना और डिजिटल दुनिया में रचनात्मक रूप से काम करने के लिए मीडिया साक्षरता सुनिश्चित करना शामिल है। प्रभावी होने के लिए प्रौद्योगिकी और बुनियादी ढाँचे में निवेश, शिक्षकों के लिए व्यापक प्रशिक्षण और शैक्षणिक संस्थानों और प्रौद्योगिकी प्रदाताओं के बीच साझेदारी की आवश्यकता होती है।

आज हम विश्वव्यापी आतंकवाद और युद्ध की दुनिया में जी रहे हैं। मानव इतिहास में युद्ध इतना भयावह और विध्वंसकारी कभी नहीं रहा, जितना आज हो गया है। जैव रासायनिक व आणविक शस्त्र क्षण भर में मनुष्य और मानव सभ्यता को नष्ट कर सकते हैं। द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका के पश्चात् पिछले वर्षों में मानव इतिहास की सबसे भयावह व विध्वंसकारी घटनाओं का अनुभव मानव जाति ने किया है, ये घटनायें हैं; वर्ल्ड ट्रेड सेंटर (न्यूयार्क, अमेरिका) पर आतंकी हमला और क्षण भर में ताश के पत्ते की तरह इमारत का ढह जाना, अफगानिस्तान पर दिल दहला देने वाले आक्रमण, ईराक युद्ध, मुम्बई और भारत के अनेक हिस्सों में क्रम से आतंकवादी बम विस्फोट आदि। केवल भारत ही नहीं अन्य देशों में भी जैसे कि इंग्लैण्ड व पाकिस्तान आदि में भी सिलसिले वार आतंकी बम विस्फोट होते रहे हैं। आज पूरा विश्व अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद और युद्ध की छाया में जी रहा है। साथ ही साथ हम इस तथ्य को भी अस्वीकार नहीं कर सकते हैं कि मनुष्य ने विज्ञान और टेक्नालॉजी की सहायता से

प्राकृतिक संसाधनों पर अपना अधिकार प्राप्त करने की चेष्टा की है और मानव सभ्यता के भौतिक विकास के शिखर पर पहुंच चुका है और आगे भी त्वरित वेग से बढ़ रहा है। इस त्वरित विकास का सामाजिक दुष्परिणाम, मनुष्य के अमानवीकरण के रूप में दिखाई दे रहा है। यही कारण है कि आज समाज में मनुष्य ईर्ष्या-द्वेष, हिंसा, कलह, उलझन, चिंता आदि अनेक प्रकार की उत्तेजनाओं से ग्रस्त हैं। आज मनुष्य इस हिंसा युक्त संसार में त्रस्त हैं। बाह्य संसार की उत्तेजनाओं के अतिरिक्त मनुष्य आन्तरिक दृष्टि से भी बेचैन है। वह आधुनिक जीवन की बीमारियों (maladies) को झेल रहा है जहां, उच्च स्तरीय व अस्वास्थ्यकर प्रतिस्पर्धाएं, आवश्यकता से अधिक बाजारीकरण और परिणामस्वरूप विकसित इच्छाएं व वासनाएं, सामाजिक व भावनात्मक असुरक्षा, पारस्परिक संघर्ष और लड़ाई झगड़े आदि उसे गंभीर रूप से प्रभावित कर रहे हैं। फलस्वरूप भय, कष्ट, अभाव, पीड़ा, घृणा, हवस, क्रोध, अकेलापन तथा सभी प्रकार के दबाव व तनाव व्यक्ति के दैनिक जीवन में घटित हो रहे हैं। आज व्यक्ति बाह्य और आन्तरिक जगत के बीच टूटता जा रहा है। यह आधुनिक जीवन की त्रासदी है।

प्रश्न उठता है कि इस समस्या का समाधान क्या है? समस्या विकट है लेकिन इसकी उपेक्षा करना भी संभव नहीं है। प्रश्न यह है कि मानवता को पुनः किस प्रकार अहिंसक, सुरक्षित, निर्भय व तनाव रहित बनाया जाय। इस समस्या का समाधान केवल 'शांति' में ही निहित है। आज समय आ गया है, जबकि विश्व से लेकर व्यक्तिगत स्तर तक 'शांति' स्थापित करने के उपाय व साधन ढूंढ़े जाएँ। युद्ध की वकालत करने वाले सोचते हैं कि अनन्त शान्ति की प्राप्ति एक सुंदर स्वप्न है जो कभी साकार नहीं हो सकता। ऐसे विचारकों के लिए युद्ध और संघर्ष ही 'शांति' स्थापित करने के माध्यम हैं। संघर्ष तो जीवन का नियम है। एक राष्ट्र तभी मजबूत और शक्तिशाली बन सकता है और शांति बनाए रख सकता है, जब उसके पास शत्रु राष्ट्रों को परास्त करने की क्षमता होगी। ऐसे लोगों के लिए 'युद्ध' एक अपरिहार्य सत्य है। यदि कोई किसी अन्य उपायों या युक्तियों के द्वारा विश्व में शांति स्थापित करने का स्वप्न देखता है तो वह मूर्ख है। अतः शांति एक ऐसा प्रत्यय या अनुभूति है जो अस्थायी और अप्राप्य है। साथ ही साथ विश्व में कुछ ऐसे विचारकों का भी वर्ग है जिनका विश्वास अहिंसा और शांतिपूर्ण जीवन में है। उनका विश्वास है कि 'शांति' मनुष्य का एक स्थायी भाव है। 'शांति' की प्राप्ति निश्चित रूप से सम्भव है। जरूरत है तो केवल 'इच्छाशक्ति' (The will for peace) की। 'शांति' जीवन का अंतिम व सनातन मूल्य है, जिसे कोई भी मानव समाज चाहता है। मारिया मांटेसरी का कहना है कि सम्पूर्ण शिक्षा 'शांति' के लिए है। भारत वर्ष में अनादि काल से हमारे ऋषि, मुनि व साधु संतों ने

हमेशा ही सबके सुख व शांति (सर्वे भवन्तु सुखिनः) हेतु प्रार्थना की है। महात्मा बुद्ध, महावीर, गुरु नानक आदि महान देव स्वरूप विचारकों के दर्शन तथा प्राचीन भारतीय ग्रन्थ जैसे कि भगवद्गीता, वेद व उपनिषदों में शांतिपूर्ण व समन्वित जीवन हेतु मानव समाज के लिए सम्यक्/ मार्ग व शुभ आचरणों का निर्धारण किया गया है। प्राचीन दर्शन के निहितार्थ, आज के आधुनिक विश्व के संदर्भ में भी प्रासंगिक है। आधुनिक युग में सभी भौतिक विकास और प्रगति का आधार धर्म और नीति (उचित व्यवहार और नैतिक मूल्य) होना आवश्यक है, लेकिन दुर्भाग्यवश मानव सभ्यता के भौतिक विकास और वृद्धि की होड़ में व्यक्ति इन मूल्यों को भूल गया है या इनकी उपेक्षा की है और परिणाम स्वरूप वह नैतिक संकट के दलदल में धंसता जा रहा है। आज पूरे विश्व में समाज का नैतिक पतन हुआ है, भारतवर्ष अपवाद नहीं है। भारतीय जीवन के प्रायः सभी पक्षों में नैतिक दोष दिखायी देते हैं, हमारे समाज में आध्यात्मिकता व नैतिक मूल्य विलुप्त होते जा रहे हैं। वर्तमान मूल्य संकट ने मनुष्य को एक बेचैन व अशान्त प्राणी में परिवर्तित कर दिया है। यह आधुनिक विश्व की सबसे बड़ी व उभरती त्रासदी है, जिसे मनुष्य झेल रहा है।

विश्व तथा राष्ट्रीय स्तर पर समस्या समाधान के प्रयासः

द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका के फलस्वरूप संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई जिससे कि भविष्य में पुनः युद्ध की आवृत्ति से बचा जा सके। संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में गहन विचार विमर्श के पश्चात् एक निष्कर्ष उभर कर आया कि शांति की स्थापना और विकास में शिक्षा की भूमिका और आवश्यकता सबसे महत्वपूर्ण है। यह भाव यूनेस्को के संविधान की भूमिका के प्रथम वाक्य से ही प्रतिबिम्बित होता है, "चूँकि युद्ध मनुष्य के मस्तिष्क में प्रारम्भ होता है। अतः शांति की सुरक्षा के लिये उपाय भी मनुष्य के मस्तिष्क में ही निर्मित करने चाहिए।" शांति के निर्माण और विकास की दिशा में यूनेस्को सदैव ही प्रयासरत रहा है। निःशस्त्रीकरण पर आयोजित संयुक्त राष्ट्र महासभा (1978) ने बलपूर्वक कहा कि समस्या की जड़ तक पहुंचना आवश्यक है और इसका समाधान मनुष्यों के मस्तिष्क को प्रभावित करने से ही होगा। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने शिक्षा, विज्ञान, शोध, जनसंचार माध्यम, गरीबी उन्मूलन आदि के क्षेत्र में दीर्घकालीन कार्यक्रम चलाने का आह्वान किया। महासभा ने इस बात पर बल दिया कि लक्ष्य की प्राप्ति के लिये केवल स्कूल तथा विश्वविद्यालयी स्तर पर ही नहीं बल्कि 'शान्ति शिक्षा' (Peace Education) को उन सभी स्तरों पर सम्मिलित करने की आवश्यकता है जहां से ज्ञान और कौशल प्राप्त होता है। इस आवश्यकता को संज्ञान में रखते हुये यूनेस्को ने डेलर्स आयोग का गठन किया जिसने अपनी रिपोर्ट लर्निंग; दि ट्रेजर विदिन (Learning: The

Treasure Within) में मिलजुल कर रहना (Learning to live together : 1996) को शिक्षा के चार स्तम्भों में से एक घोषित किया। यूनेस्को पीस प्रोजेक्ट (1999) इस दिशा में एक गम्भीर कदम माना जा सकता है। यू० एन० जनरल एसेम्बली रिसॉल्यूशन (UN General Assembly Resolution) ने वर्ष 2000 से वर्ष 2010 तक के दशक को शांति की संस्कृति (Culture of Peace) तथा अहिंसा (Non-Violence) का दशक घोषित किया है और कहा है कि शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से 'शांति' से सम्बन्धित विभिन्न क्षेत्रों को चिन्हित कर युवकों को सचेत व जागरूक बनाया जाय। यूनेस्को के डायरेक्टर जनरल फेडरिक मेयर (Federic Mayer) का विचार था कि, "जो देश शांति कायम करने के लिये अपनी शस्त्र सेना और शस्त्र बनाने वाली फैक्टरियों पर निर्भर करते हैं, उन्हें अपना ध्यान दीर्घकालीन सुरक्षात्मक कार्य अर्थात् शिक्षा के माध्यम से शांति स्थापित करने की ओर लगाना चाहिए। उन्होंने आगे यह कहा कि शिक्षा ऐसी हो जो न्याय (justice), समता (equity) तथा अहिंसा (non-violence) आदि मूल्यों का रोपण करने वाली हो। जहां तक भारतवर्ष का प्रश्न है, यहां सदैव शांति स्थापना के उपाय शिक्षा के माध्यम से ही ढूंढने का प्रयास किया गया है। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने ऐसे समाज की कल्पना की थी, जिसका आधार अहिंसा और सत्य पालन हो, जो किसी भी प्रकार के शोषण व अन्याय से मुक्त हो। महात्मा गांधी का पूर्ण विश्वास था कि अहिंसा और सत्य की प्राप्ति केवल शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव है।

भारतीय संविधान एक आदर्श संविधान है जिनमें वे मूल्य और दृष्टि समाहित हैं जो किसी समाज को समन्वित, प्रगतिशील और शांतिपूर्ण ढंग से रहने में सहायक हो सकते हैं। भारतीय संविधान उन मूल्यों से ओतप्रोत है जिनके आधार पर समाज अपने गतिशील सामाजिक-सांस्कृतिक ढांचे में सुख व शांति से रह सकता है। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में विभिन्न शिक्षा आयोगों व समितियों ने शिक्षा के विभिन्न स्तर पर मूल्य आरोपण पर विशेष रूप से बल दिया है। मूल्य संकट पर चिंता व्यक्त करते हुए NCERT ने समय-समय पर राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना (National Curriculum Framework-1975-2000) के निर्माण का आधार ही मूल्यों का निरूपण बनाया है और शिक्षा के विभिन्न स्तर पर पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों में शांति तत्वों को सम्मिलित करने का प्रयास किया है। NCERT ने अपने शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों (in service teacher education programmes) में भी शांति मूल्यों को विशेष रूप से शामिल किया है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर NCERT ने वर्ष 1999 में जापान, वर्ष 2000 में श्रीलंका तथा वर्ष 2003 में भारत में शांति व सम्बन्धित मुद्दों पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशनों में बढ़चढ़कर हिस्सा लिया

है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 (National Policy on Education, 1986) ने बलपूर्वक संस्तुति दी थी कि, "शिक्षा को नवयुवकों की पीढ़ी को अंतर्राष्ट्रीय सहयोग व शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के लिए प्रेरित करना होगा।" राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन कार्यक्रम (Programme of Action 1992) ने मूल्य शिक्षा के विभिन्न घटकों (components) को विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर सम्मिलित करने का प्रयास किया। क्रियान्वयन कार्यक्रम में निहित भावों को ध्वनित करते हुए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना (2000) ने मूल्य शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करते हुए यह विचार दिए कि, "आवश्यकता धार्मिक शिक्षा की नहीं है, बल्कि धर्मों की शिक्षा, उनके मूल तत्व, अंतर्निहित मूल्य, सभी धर्मों के दर्शन के तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता है।"²

भारत में पिछले कुछ दशकों में धार्मिक व नैतिक शिक्षा के बजाय मूल्य शिक्षा का मार्ग अपनाते हुए अन्त में शान्ति शिक्षा और शांति के लिए शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। भारत में यह प्रयास शिक्षा के विशाल संदर्भको ध्यान में रखकर किया गया है-विगत वर्ष में राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना (Nation Curriculum Framework, 2005) में NCERT ने अपने उपागम में महत्वपूर्ण परिवर्तन करते हुए शांति शिक्षा (Peace Education) के स्थान पर शांति के लिए शिक्षा (Education for Peace) को एक आदर्श रणनीति (Strategy) मानते हुए यह कहा है कि 'शांति के लिए शिक्षा' ही शांति मूल्यों (peace values) के संदर्भीकरण (contextualisation) तथा क्रियान्वयन (operationalisation) में सहायक हो सकती है।

राष्ट्रीय व सरकारी कार्यक्रमों के अतिरिक्त देश में अनेक संस्थाएं हैं जो शान्ति के विकास हेतु कार्य कर रही हैं। विशेष रूप से शांति की गांधीवादी विचारधारा से सम्बन्धित 'गांधी पीस फाउण्डेशन' (Gandhi Peace Foundation) गांधियन इन्स्टिट्यूट आफ स्टडीज (Gandhian Institute of Studies) तथा जयपुर पीस फाउण्डेशन (Jaipur Peace Foundation) प्रमुख हैं। दुर्भाग्यवश भारतीय शैक्षिक संस्थाओं में शांति अध्ययन (Peace studies) की अभी तक उपेक्षा होती रही है। भारत ने अपने दार्शनिक परम्पराओं और सांस्कृतिक धरोहरों की उपेक्षा की है जिसमें अहिंसा, व शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व समाहित है। विश्व के अनेक हिस्सों में आज भी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के संघर्षों के अहिंसात्मक समाधान (non-violent resolution of conflicts) का प्रयोग अनेक विचारक व नेता कर रहे हैं, जो हमारे लिए शर्म की बात है। अनेक गैर सरकारी संस्थाएं (NGOs) शांति शिक्षा के विभिन्न पक्षों के विकास हेतु अपना योगदान दे रही हैं, वे पक्ष हैं, जैसे कि मानव अधिकार, लिंग भेद, पर्यावरण आदि। लेकिन इन प्रयासों का

कोई प्रभाव विभिन्न स्तर की शैक्षिक संस्थाओं पर परिलक्षित नहीं होता। इन गैर सरकारी संस्थाओं को भी एकजुट होकर समन्वित ढंग से कार्य करना चाहिए जिससे इनका प्रभाव शिक्षण संस्थाओं पर भी पड़े।

शांति शिक्षा:

बीसवीं सदी में विश्व के पटल पर राजनीतिक, वैज्ञानिक, तकनीकी, सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में सार्थक प्रगति व विकास हुआ और फलस्वरूप वैश्वीकरण (globalisation) तथा उदारीकरण (liberalisation) जैसी अदर हरणाएं विश्व में उभरी। धीरे-धीरे विश्व एक विश्वग्राम (global village) में परिवर्तित होने लगा। लेकिन इस प्रकार के परिवर्तन समाज में समता (equity), शांति (peace) एवं समन्वय (harmony) लाने में असफल रहे हैं। उदारीकरण व वैश्वीकरण के दुष्परिणाम अवश्य समाज में दिखायी देने लगे हैं जिनके फलस्वरूप समाज में सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक असंतुलन उत्पन्न हो रहा है। आज मनुष्य के पास भौतिक सम्पदा व सुख आराम के सभी साधन उपलब्ध हैं वहीं वैश्विक समाज जाति, प्रजाति, धर्म, वर्ग, सामाजिक-आर्थिक स्तर आदि के आधार पर बंट गया है। आधुनिक मानव आत्म केन्द्रित व आत्मघाती होता जा रहा है; समन्वयात्मक व शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व आज खतरे में है। इसका एक प्रमुख कारण जनसंख्या विस्फोट व प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन भी है। पर्यावरणीय असंतुलन ने मानव अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। आज उभरते वैश्विक समाज में आवश्यकता है, संकुचित राष्ट्रीयता के स्थान पर सार्वभौमीकरण या वसुधैव कुटुम्बकम् की, प्रजातीय व सांस्कृतिक रुढ़ियों के स्थान पर अन्य संस्कृतियों व प्रजातियों के प्रति सहिष्णुता व सद्भाव “की, अनेकता और विविधता के बोध की। आज की सबसे गम्भीर आवश्यकता है, अहिंसा और सहिष्णुता की संस्कृति की स्थापना की। आज आवश्यकता है एक 'शांति' व समन्वित समाज के निर्माण की। अतः उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में शिक्षा को शांतिशिक्षा के रूप में विकसित करने का प्रयास जारी है जिसके द्वारा समाज में शांति की संस्कृति (Culture of Peace), सहिष्णुता, प्रजातांत्रिक मूल्य, मानव अधिकार व कर्तव्य बोध स्थापित किया जा सके।

शांति का प्रत्यय व अर्थ:

शांति का प्रत्यय अपने आप में एक भ्रमात्मक प्रत्यय है, जिसकी व्याख्या अनेक प्रकार से की जा सकती है। सामान्यतः शांति को संघर्ष या युद्ध की अनुपस्थिति (absence of conflict or war) के रूप में समझा जाता है। अनन्तकाल से समाज में शांति को मन की शांति या आंतरिक शांति के रूप में ग्रहण किया जाता रहा है। पश्चिम में

वैज्ञानिक समाजवाद (Scientific Socialism) के उदय के साथ मार्क्सवादी विचारकों ने शांति के प्रत्यय को सामाजिक संरचना के संदर्भ में स्पष्ट करने का प्रयास किया। इनका विचार था कि "सम्पत्ति का असमान वितरण तथा निजी सम्पत्ति का संचय ही सभी सामाजिक बुराइयों और हिंसा का मूल कारण है, अतः 'शांति' संरचनात्मक हिंसा की अनुपस्थिति (absence of structural violence) है।" अतः उपरोक्त दोनों परिभाषाएं एक ही सिक्के के दो पहलू हैं जो शांति के प्रत्यय को पूर्णता प्रदान करती हैं। महात्मा गांधी ने शांति के प्रत्यय को हिंसा के संदर्भ में व्यापक ढंग से स्पष्ट करते हुए कहा कि, हिंसा का अर्थ शोषण है यह आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक है जो एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र का करता है, एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का करता है; एक व्यवस्था दूसरी व्यवस्था का करती है जैसे मशीनें मनुष्य का काम कर रही हैं। हिंसा का विपरीत अहिंसा है जिसके मुख्य आठ घटक हैं; शांति, समानता, अभय, विनम्रता, स्नेह, आत्मनियंत्रण, सत्य और सहिष्णुता। शांति की गांधीवादी विचारधारा में सत्य, अहिंसा, आत्मपीड़ा तथा सम्बन्धों में साधन और साध्य महत्वपूर्ण हैं। गांधी का दृढ़ विचार था कि साधन उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितना कि साध्य। यही कारण था कि महात्मा गांधी ने सत्याग्रह अपनाया और दूसरों को कष्ट देने के बजाय आत्मपीड़ा को ही चुना क्योंकि यदि शोषणकर्ता को दण्डित किया जाय या नष्ट कर दिया जाय तो यह क्रमिक हिंसा एवं पृणा को जन्म देगा। आज गांधी के दर्शन की आवश्यकता कहीं अधिक है।

निष्कर्षतः शांति के प्रत्यय के अंतर्गत निम्न तत्व आते हैं-

- (1) तनाव, संघर्ष और युद्ध की अनुपस्थिति।
- (2) अहिंसात्मक सामाजिक व्यवस्था।
- (3) किसी भी प्रकार के शोषण व अन्याय की अनुपस्थिति।
- (4) अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव व अवबोध।
- (5) पर्यावरणीय संतुलन व संरक्षण।
- (6) आंतरिक शांति

इस प्रकार शांति एक जीवन जीने का तरीका (style of life), एक दृष्टिकोण, एक संतुलन की स्थिति (state of equilibrium) है। यह एक आंतरिक शांति और दूसरों के प्रति शुभेच्छाओं की अनुभूति है। शांति का प्रत्यय अत्यधिक विस्तृत है जिसमें अनेकानेक मूल्यों को समाहित किया जा सकता है। रीजनल कांग्रेस ऑफ एशिया

पैसिफिक नेटवर्क फॉर इंटरनेशनल एजुकेशन एण्ड वेल्थू एजुकेशन (APNIEVE, 1995) ने अनेक शांति मूल्यों को चिन्हित किया जिसके अन्तर्गत मानव अधिकार, प्रजातंत्र व स्थिर विकास (democracy and sustainable development) सम्बन्धित मूल्यों को सम्मिलित किया गया। इस प्रकार शांति के प्रत्यय का निरन्तर विकास हो रहा है जिसके अंतर्गत स्नेह (love), दया (compassion) समन्वय (harmony), परस्पर निर्भरता (interdependence) दूसरों का ख्याल व दूसरों के कष्ट में भागीदारी (caring and sharing), समानुभूति (empathy), कृतज्ञता (gratitude) तथा आध्यात्मिकता आदि मूल्यों का समावेश किया गया है। यूनेस्को कान्फ्रेंस ऑन टीचर एजुकेशन फार पीस एण्ड इंटरनेशनल अंडरस्टैंडिंग (Unesco Conference on Teacher Education for Peace and International Understanding, 1999) ने दस प्रमुख मूल्यों को चिन्हित कर शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सम्मिलित करने पर बल दिया जो शांति के प्रत्यय में स्वनिहित है। इन प्रमुख मूल्यों में (core values) हैं, परस्पर सद्भाव, सहयोग, सहिष्णुता, न्यायपरक जीवन, मानव अधिकार, व दायित्व बोध प्रमुख घटक रहे हैं। इन मूल्यों के अतिरिक्त आध्यात्मिक मूल्यों की उपेक्षा नहीं की जा सकती जिनके द्वारा इस धरा पर पूर्ण शांति (ultimate peace) सम्भव है। इन मूल्यों के निर्माण व आरोपण में शिक्षा की भूमिका पहले से अधिक महत्वपूर्ण और आवश्यक है। आज शांति को स्वयमेव मूल्य के रूप में स्थापित किया जा रहा है। 'शांति' अंतिम व स्थायी मूल्य है जिसकी प्राप्ति के लिए अनेक मूल्यों को धारण करने की आवश्यकता है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति में उन्हीं मूल्यों की स्थापना व सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना है जिससे एक शांतिप्रिय व समन्वयात्मक समाज की कल्पना साकार हो सके।

शांति शिक्षा:

शिक्षा का अंग्रेजी रूपान्तर एजुकेशन (education) है जो लेटिन शब्द एडुकेयर (educare) से उद्भूत हुआ है और जिसका अर्थ है, अंदर से बाहर निकालना या अंतर्निहित गुणों का प्रकटीकरण। इस दृष्टि से इयान एम० हैरिस के अनुसार, 'शांति-शिक्षा' का अर्थ है, "मनुष्य के उन अंतर्निहित संवेगों का बाह्य प्रकटीकरण एवं विकास जिनके द्वारा वह दूसरों के साथ शांतिपूर्ण ढंग से रह सके। साथ ही शांति शिक्षा उन शांति मूल्यों पर बल देती है, जिन पर समाज को आधारित होना चाहिए।" 'शांति शिक्षा' का सम्बन्ध मनुष्य के मन में निहित आंतरिक संघर्ष (internal conflict) तथा बाह्य जगत की हिंसात्मक परिस्थितियों (violent situations) दोनों से है। परम्परागत दृष्टि से 'शांतिशिक्षा' की

प्रमुख दृष्टि युद्ध के कारणों पर रही है लेकिन पिछले दशकों में संरचनात्मक हिंसा (structural violence) के प्रत्यय के उदय के साथ 'शांति शिक्षा' के प्रत्यय का भी विस्तार हुआ और शांति शिक्षा के अंतर्गत मानव संघर्ष (human conflict) के सभी कारणों का अध्ययन सम्मिलित किया गया है। एक यूरोपीय शांति प्रशिक्षक के अनुसार शांति शिक्षा की परिभाषा इस प्रकार है- "मनुष्य के व्यवहार को लक्ष्य बनाकर संघर्ष की वास्तविकता को समझने व तार्किक समाधान प्राप्त करने के उद्देश्य से अधिगम प्रक्रिया को प्रारम्भ करना।" इस परिभाषा के अनुसार 'शांति शिक्षा' शांति स्थापित करने की कुशलता सिखाती है। एक जापानी शांति प्रशिक्षक के अनुसार 'शांति शिक्षा' का सम्बन्ध अशान्तिपूर्ण परिस्थितियों से है। अमेरिकी शांति-शिक्षक बेट्टी रियरडन शांति शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित करती हैं- "वह अधिगम जिसका उद्देश्य अधिगमकर्ता को इस तरह तैयार करना है कि वह शांति प्राप्ति की दिशा में अपना योगदान दे सके। अनेक परिभाषाओं के विश्लेषण के आधार पर 'शांति शिक्षा' की एक सामान्य परिभाषा इस प्रकार हो सकती है, "शांति शिक्षा ऐसी हिंसा के ढांचे पर प्रश्न करती है जो हमारे दैनिक जीवन में होती रहती है, साथ ही यह शांतिपूर्ण प्रवृत्तियों का निर्माण करती है, जो युद्धवादी शक्तिशाली मूल्यों का प्रतिकार या विरोध कर सकें।

शांति शिक्षा का लक्ष्य:

डोग्लास स्लोन ने शांति शिक्षा के लघु कालीन व दीर्घकालीन लक्ष्य को स्पष्ट करते हुए कहा है कि, "शांति शिक्षा के लघु कालीन व दीर्घकालीन लक्ष्य इस प्रकार है।" लघुकालीन लक्ष्य है व्यवस्था को इस ढंग से परिवर्तित करना, जिससे कि जीवन में अधिक स्थिरता आ सके। इस स्तर पर शांति शिक्षा उन तात्कालिक परिस्थितियों का प्रतिकार करती है या विरोध करती है जो पृथ्वी नामक ग्रह पर जीवन के लिए खतरा हैं। दीर्घकालीन लक्ष्य है, मानव में शांति संचेतना, बोध और विश्वास उत्पन्न करना जो उनमें शांतिपूर्ण अस्तित्व की आकांक्षा जागृत कर सके तथा अहिंसा के विकास के लिए मानव मूल्यों में परिवर्तन कर सके।" शांति शिक्षा के लघु कालीन व दीर्घकालीन लक्ष्यों का विश्लेषण अनेक पाश्चात्य शांति शिक्षकों ने किया है, जिनके आधार पर शांति शिक्षा के प्रमुख लक्ष्यों का निर्धारण हम इस प्रकार कर सकते हैं"-

1. शांति के प्रत्यय को समझना और महत्व देना।
2. भय को समझकर, दूर करने का प्रयास करना।
3. सुरक्षा व्यवस्था के विषय में सूचनाएं प्रदान करना।

4. युद्ध उन्मुख व्यवहार को समझने की सपता प्रदान करना।

5. अन्तःसरिकृतिक अवोध का विकास करना।

6 भविष्य के प्रति उन्मुख करना।

शांति को एक प्रक्रिया के रूप में समझना।

8. सामाजिक न्याय के संदर्भ में शांति के प्रत्यय का विकास करना।

9. जीवन के प्रति सम्मान को जागृत करना।

10. हिंसा को समाप्त करने का प्रयास करना।

उपरोक्त लक्ष्यों के अतिरिक्त भी शांति शिक्षा का गठन कुछ अन्य लक्ष्यों को भी आधार बनाकर किया जाता है क्योंकि शांति का क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत है। ये लक्ष्य शांति-शिक्षा के उद्देश्यों के निर्धारण और शैक्षिक कार्यक्रमों के नियोजन हेतु एक संरचनात्मक ढांचा प्रस्तुत करते हैं। शांति शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करना आसान नहीं है। इस कार्य के लिए साहस, वीरता, शक्ति तथा लगन आदि नेतृत्व के गुण अपेक्षित हैं। एक शांति-शिक्षक को अपने विद्यार्थियों से प्रश्न करना है कि, वे अपने लिए भारतवर्ष में कैसा विश्व और जीवन चाहते हैं तथा उन विद्यार्थियों को ऐसी दृष्टि प्रदान करनी है जो मानव व्यवहार में मूलभूत परिवर्तन करने को प्रेरित कर सके।

'शांति के लिए शिक्षा' में शिक्षक की भूमिका:

विद्यार्थियों के लिए शिक्षक एक आदर्श (role model) है। यदि शिक्षक शांति उन्मुख नहीं है तो वह अपने विद्यार्थियों को किसी न किसी रूप में हिंसा की ओर ले जाएगा। कहा गया है, "What I teach is what I know and what I educate is what I am." यदि शिक्षक विद्यार्थियों का आदर्श है तो उसे स्वयं शांतिप्रिय और शांति की संस्कृति का निर्माता होना बाहिए। अच्छे शिक्षक शांति मूल्यों के धारक व आरोपण करने वाले हैं, वे वास्तव में विद्यार्थियों के आदर्श व माडल है। एक अच्छे शान्ति उन्मुख शिक्षक में कुछ शांति मूल्य इस प्रकार होते हैं, जैसे-

(1) सुनने की कला (art of listening)

(2) अपनी गलतियों को मानने व सुधारने का विभमता (the humility to acknowledge and correct one's mistake)

(3) अपने कार्यों की जिम्मेदारी लेना। (assuming responsibility for one's action)

(4) आपस में सहयोग व सामूहिक हितों में भागीदारी का होना। (mutual cooperation and sharing group interests)

(5) जिन समस्याओं के कारण विद्यालय में आपसी मतभेद होते हैं उनका समाधान करने में परस्पर सहयोग करना। (helping each other to solve problems transcending differences in school climate) में

वे शिक्षक जो विद्यार्थियों को हिंसा की ओर उन्मुख करते हैं, उनकी विशेषताएं कुछ इस प्रकार होती हैं-

1. वे स्वयं अशांत होते हैं। (they are restless themselves)
2. कक्षा में दमनात्मक अनुशासन का प्रयोग करते हैं। (they impose suppressionistic discipline in the class-rooms).
3. कक्षा में प्रायः शारीरिक दण्ड, पिटाई, आदि का प्रयोग समस्या समाधान युक्तियों के रूप में करते हैं। (they generally use corporal punishments and slapping etc. as a problem solving strategies).
4. वे विद्यार्थियों की किसी बात को सुनना नहीं चाहते। (they don't want to listen the children).
5. वे विद्यार्थियों का अपमान सबके समक्ष करते हैं। (they humiliate students publicly)
6. वे विद्यार्थियों की समस्या के प्रति उदासीन होते हैं। (they are indifferent towards the problems of students)
7. कक्षा में पक्षपात व भेदभाव करते हैं। (they do partiality and descrimination in the class-rooms).

विकासशील देशों में शांति शिक्षा (Peace Education in Developing Countries)

विकासशील देशों में 'शांति शिक्षा' को 'विकास शिक्षा' के रूप में प्रायः ग्रहण किया जा रहा है। इन देशों में शांति-शिक्षा को 'अवरुद्ध विकास, भुखमरी, गरीबी, निरक्षरता व मानव अधिकार हनन के संदर्भ में देखा जाता है। बर्ड वल्ड देशों में शांति शिक्षा को विकास शिक्षा (development education) या सतत् विकास के लिए शिक्षा (education for sustainable development) के रूप में लिया जाता है। इस शिक्षा का सम्बन्ध उन समस्याओं से है जो साम्राज्यवाद, जातिवाद तथा मानव अधिकारों के हनन से उत्पन्न हुई है। यह शिक्षा लोगों में अपनी राजनीतिक व आर्थिक परिस्थितियों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करती है और उन्हें अपनी सामाजिक वास्तविकताओं को बदलने हेतु निर्णायक परिस्थितियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करती है।

यद्यपि यूरोपीय देशों में 'शांति शिक्षा' को न्यायोचित व वैध बनाने के लिए पर्याप्त संघर्ष हुआ है, लेकिन ये देश अकेले नहीं हैं। भारत में शांति शिक्षा का विकास एक अलग अपने ढंग से हुआ है जो बहुत कुछ महात्मा गांधी के विचार व कार्यों पर आधारित है। महात्मागांधी के शांति प्रयासों का आधार विश्व को मनुष्य की आध्यात्मिक एकता के आधार पर देखना रहा है।

अतः भारतीय दृष्टि से 'शांति शिक्षा' का सम्बन्ध केवल हिंसा से जुड़ी समस्याओं से ही नहीं है, बल्कि सर्वत्र मनुष्य के आध्यात्मिक विकास से भी है। महात्मा गांधी की शिक्षा भौतिक विकास और प्रगति के लिए प्रकृति और मानवता का शोषण करने का विरोध करती है। फलस्वरूप भारतवर्ष में शांति शिक्षा आत्म निर्भरता और सादे जीवन पर बल देती है। भारतीय समाज अनादिकाल से 'शांति' को महत्व देता रहा है और उसकी परम्पराएं भी पाश्चात्य देशों की परम्पराओं से भिन्न हैं। भारतीय संदर्भ में शांति शिक्षा का अर्थ एक ऐसे अहिंसा प्रेमी समाज का निर्माण करना है जो असमताओं को दूर कर एक नए समाज की रचना करे जो किसी भी प्रकार के शोषण से मुक्त हो। आज बदलते विश्व संदर्भ में 'शांति शिक्षा' एक अलग विषय, अध्ययन या अनुशासन में बंधकर नहीं रह सकती। शांति मूल्य मानव जीवन का अंतिम व स्थायी मूल्य है अतः मानव समाज में शांति स्थापित करने के लिए 'शांति' को शिक्षा की सम्पूर्ण व्यवस्था, प्रक्रिया व नियोजन से जोड़ना आवश्यक है। वैश्विक व पर्यावरणीय संदर्भ में परस्पर सम्बन्ध (inter-relationships) और परस्पर निर्भरता (inter-dependence) के प्रति भी जागरूकता उत्पन्न की जानी चाहिए, जिसके कि वे व्यापक परिप्रेक्ष्य में न्याय, शांति एवं अहिंसा को समझ सकें। इसी अवस्था में विद्यार्थी को शांति का निर्माता बनने का प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

डिजिटल युग में अवसर:

- बेहतर पहुँच और पहुँच: ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, ई-लर्निंग और वर्चुअल रियलिटी पारंपरिक कक्षा सेटिंग्स से परे शांति शिक्षा सामग्री तक पहुँच को व्यापक बना सकते हैं।
- **इंटरैक्टिव लर्निंग:** डिजिटल कक्षाएँ और इंटरैक्टिव प्लेटफॉर्म छात्रों के बीच सहयोग, आलोचनात्मक सोच और सहानुभूति को बढ़ावा देते हैं।
- **वैश्विक जागरूकता:** डिजिटल उपकरण वैश्विक मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ा सकते हैं और छात्रों को विविध दृष्टिकोणों से जोड़ सकते हैं, जिससे वैश्विक ज़िम्मेदारी की भावना को बढ़ावा मिलता है।

- **कौशल विकास:** डिजिटल शांति शिक्षा सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा (एसईएल) कौशल में सुधार कर सकती है, जो भावनात्मक विनियमन और सहानुभूतिपूर्ण संघर्ष समाधान के लिए आवश्यक हैं।

प्रमुख घटक और दृष्टिकोण:

- **डिजिटल साक्षरता और नागरिकता:** व्यक्तियों को सूचना का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना, गलत सूचनाओं की पहचान करना, ऑनलाइन जोखिमों को समझना और ऑनलाइन स्थानों में रचनात्मक रूप से संलग्न होना सिखाना।
- **महत्वपूर्ण शांति शिक्षा:** हिंसा के मूल कारणों, सत्ता संरचनाओं और डिजिटल मीडिया का व्यक्तियों और समूहों पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसकी जाँच को प्रोत्साहित करना।
- **मीडिया साक्षरता:** घृणास्पद भाषण, षड्यंत्र के सिद्धांत और डीपफेक जैसी घटनाओं को पहचानने और उनका मुकाबला करने की क्षमता को बढ़ावा देना।
- **सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा (एसईएल):** भावनात्मक बुद्धिमत्ता का निर्माण करने और सहानुभूति को बढ़ावा देने के लिए एसईएल को डिजिटल वातावरण में एकीकृत करना, जो शांतिपूर्ण बातचीत के लिए महत्वपूर्ण है।
- **युवा-नेतृत्व वाली पहल:** युवाओं को शांति प्रयासों का नेतृत्व करने और सकारात्मक डिजिटल समुदाय बनाने के लिए सशक्त बनाना।

चुनौतियाँ और विचार:

- **डिजिटल विभाजन:** प्रौद्योगिकी और इंटरनेट तक असमान पहुँच प्रभावी कार्यान्वयन में एक बाधा बनी हुई है।
- **संकाय प्रशिक्षण का अभाव:** शांति शिक्षा को डिजिटल कक्षाओं में प्रभावी ढंग से एकीकृत करने और शांति शिक्षण के लिए डिजिटल उपकरणों का उपयोग करने के लिए शिक्षकों को व्यापक प्रशिक्षण की आवश्यकता है।
- **दुष्प्रचार और अभद्र भाषा:** डिजिटल स्पेस भी संघर्ष का एक स्रोत है, जहाँ दुष्प्रचार और हानिकारक कथाएँ तेज़ी से फैल रही हैं, जिसके लिए निरंतर सतर्कता और प्रति-प्रयासों की आवश्यकता है।
- **सामाजिक-तकनीकी प्रभाव:** यह विचार करना महत्वपूर्ण है कि डिजिटल मीडिया का डिज़ाइन और उपयोग व्यक्तियों और समूहों को कैसे प्रभावित करता है, न कि केवल उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली सामग्री को। कार्यान्वयन के लिए सुझाव

- व्यापक प्रशिक्षण विकसित करें: डिजिटल शिक्षण और मीडिया साक्षरता पर शिक्षकों के लिए मजबूत प्रशिक्षण कार्यक्रम बनाएँ।
- बुनियादी ढाँचे में निवेश करें: सभी शिक्षार्थियों के लिए समान पहुँच सुनिश्चित करने के लिए तकनीकी बुनियादी ढाँचे और कनेक्टिविटी में सुधार करें।
- साझेदारी को बढ़ावा दें: शैक्षणिक संस्थानों, प्रौद्योगिकी प्रदाताओं और नागरिक समाज संगठनों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करें।
- पाठ्यक्रम में शामिल करें: शांति की संस्कृति बनाने के लिए शांति शिक्षा मॉड्यूल को मुख्यधारा के डिजिटल पाठ्यक्रम में एकीकृत करें।

संदर्भ:

- अदावल (1979). क्वालिटी ऑफ टीचर्स, अमिताभ प्रकाशन ।
- उपाध्याय, पी. (2013). भारतीय शिक्षा में उदीयमान प्रवृत्तियाँ. शारदा पुस्तक भवन.
- ओड, एल. के. (2019). शैक्षिक प्रशासन. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी (13वां संस्करण)
- ओबराय, एस. सी. (1993). शैक्षिक व्यावसायिक निर्देशन और परामर्श. लॉयल बुक डिपो.
- कॉल, एल. (1995). मेथाडोलॉजी आफ एजुकेशनल रिसर्च. विकास पब्लिकेशन हाउस प्राइवेट लिमिटेड.
- कॉल, एल. (2013). एजुकेशनल रिसर्च मेथाडोलॉजी. विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड.
- कॉल, एल. (2010). शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली. नोएडा विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड.
- कोच्चर, एस. के. (2007). शैक्षिक निर्देशन और परामर्श. स्टर्लिंग.
- कपिल, एच. के. (2009). अनुसंधान विधियाँ. एचपी भार्गव बुक हाउस.